प्रातः क्लास 29-8-68 ओमशान्ति पिताश्री शिव बाबा याद है?

ओमशान्ति। ओमशान्ति का अर्थ तो बाप ने अच्छी रीति समझाया है। जहां मिलिट्री बड़ी होती है वह फिर कहते हैं अटेन्शन। उन लोगों का अटेन्शन माना सायलेन्स। तुमको भी बाप कहते हैं अटेन्शन। अर्थात बाप की याद में हो। मुख से बोलना पड़ता है। नहीं तो वास्तव में बोलने से भी दूर होना चाहिए। अटेन्शन। बाप की याद मे हो। यह बाप की डायरेक्शन अथवा श्रीमत मिलती है। तुमने आत्मा को भी पहचाना है तो बाप को याद करने बिगर तुम विकर्माजीत अथवा सतोप्रधान, पवित्र बन नहीं सकते हो। मूल बात ही यह है। बाप कहते हैं मीठे2 लाडले बच्चों अपन को आत्मा समझ बाप को याद करो। अटेन्शन। यह है सभी इस समय की बातें। जो फिर उस तरफ ले गये हैं। वह भी मिलिट्री है तुम भी मिलिटी हो। अन्डर ग्राउन्ड मिलिट्री भी कहते हैं ना। गुम हो जाते हैं। तुम भी अन्दरग्राउन्ड हो। तुम भी गुम हो जाते हो। अर्थात बाप की याद मे लीन हो जाते हो। उनको कहा जाता है अन्डरग्राउन्ड। कोई पहचान न सके। क्योंकि तुम गुप्त हो ना। सिर्फ बाप कहते हैं मुझे याद करो। क्योंकि बाप जानते हैं याद से ही इन विचारों का कल्याण होगा। अभी तो विचारे ही कहेंगे ना। स्वर्ग में विचारे होते ही नहीं। बिचारे उनको कहा जाता है जो कहां बन्धन आदि में फंसे रहते हैं। यह भी तुम अभी समझते हो। बाप ने समझाया है तुमको लाईट हाउस भी कहा जाता है। बाप को भी लाईट हाउस कहा जाता है। बाप घड़ी2 समझाते हैं एक आंख में शान्तिधाम, दूसरे आंख में सुखधाम रखो। तुम चैतन्य लाईट हाउस हो। सभी को सुखधाम शान्तिधाम का रास्ता बताना है। इस दुःखधाम में सभी की नईया अटक पड़ी है। तब तो कहते हैं नईया मेरी पार लगाओ हे मांझी। सभी की नईया फंस पड़ी है। अभी उनको सैलवेज कौन करे। वह कोई सैलवेशन आर्मी है नहीं। ऐसे ही नाम रख दिया है। वास्तव में तो सैलवेशन आर्मी तुम हो। हरेक को सैलवेज करते हो। सभी 5 विकारों रूपी जुंजीर में अटक पड़े हैं। इसलिए कहते हैं हमको लिबरेट करो। सैलवेज करो। तो बाप कहते हैं इस याद की यात्रा से ही तुम पार हो जावेंगे। अभी सभी फंसे हुये हैं। बाप को बागवान भी कहते हैं। इस समय की ही सभी बातें हैं। तुमको फूल बनना है। अभी सभी कांटे हैं क्योंकि हिंसक हैं। अभी अहिंसक बनना है। पावन बनना है। जो भी धर्म स्थापन करने आते हैं वह तो पवित्र आत्मायें ही आती हैं। वह तो अपवित्र हो न सके। पहले2 जब आते हैं तो पवित्र होने कारण उनकी आत्मा वा शरीर को दुःख मिल न सके क्योंकि उन पर कोई पाप है नहीं। हम जब पवित्र हैं तो कोई भी पापी नहीं होता है। तो दूसरों का भी नहीं होता है। हरेक बात पर बिचार करना होता है। वहां से आत्मायें आती हैं धर्म स्थापन करने जिनकी फिर डिनायस्टी भी चलती है। औरों की डिनायस्टी नहीं चली है। सन्यासियों की डिनायस्टी थोड़ी ही चली है। राजायें थोड़े ही बने हैं। सिक्ख लोग में महाराजा आदि हैं। दूसरा कोई डिनायस्टी नहीं है। तो वह जब आते हैं स्थापना करने तो नई आत्मायें आती हैं। क्राईस्ट आकर क्रिश्चन धर्म स्थापन किया। बुध ने बौधी। इब्राहीम ने इस्लामी .. सभी के नाम से रास मिलती है। देवी देवता धर्म का नाम नहीं मिलता। निराकार बाप ही आकर देवी देवता धर्म की स्थापना करते हैं। वह देहधारी नहीं है। और जो भी धर्म स्थापक हैं सभी के देह के नाम हैं। यह तो देह-धारी नहीं। तुम्हारी डिनायस्टी नई दुनिया में चलती है। तो बाप समझाते हैं बच्चे अपन को रूहानी मिलिट्री समझो। उस मिलिट्री का कमान्डर आदि आते हैं, कहते हैं अटेन्शन तो झट खड़े हो जाते हैं। अभी वह तो हरेक अपने2 गुरु आदि को याद करेंगे या शान्ति मे रहेंगे। परन्तु वह झूठी शान्ति हो जाती है। फिर याद किसको करना है। वह भी ज्ञान मिलता है जिससे पाप कट जाते हैं। यह ज्ञान और कोई दे नहीं। यह थोड़ेई समझते हैं हम आत्मा शान्त स्वरूप है। हमको शरीर से डिटैच हो बैठना है। यहां तुमको वह बल मिलता है जिससे तुम अपन को आत्मा समझ बाप की याद में बैठ सकते हो। बाप समझाते हैं कैसे अपन को आत्मा समझो। डिटैच हो बैठो। तुम जानते हो हम आत्माओं को अभी पीपिस जाना है। हम वहां के रहने वाले हैं। इतना धन घर के दिन घर भूल गये हैं। और कोई थोड़ेई ही समझते हैं हमको घर जाना है। पतित आत्मा तो वापिस जा न सके।

न कोई ऐसा समझाने वाला है कि किसको याद करो। बाप समझाते हैं याद तो एक ही को करना है। और कोई को याद करने से क्या फायदा। समझो भक्ति मार्ग में शिव शिव कहते रहते हैं मालूम तो कुछ है नहीं कि इससे क्या होगा। शिव को याद करने से पाप कटेंगे यह कोई को पता नहीं है। कईगुरुलोग भी ऐसे मिलते जो कहते हैं शिव शिव बोलो। कान बन्द कर लो तो घंट बजेंगे। आवाज़ सुनने में आवेंगे। सो तो जरूर आवाज होगा ही। इन सभी बातें से कोई फायदा नहीं। बाबा तो इन सभी गुरुओं से अनुभवी है ना। बाप ने कहा है ना है अर्जुन इन सभी को छोड़ो। सदगुरु मिला तो फिर और कोई की दरकार ही नहीं। गुरु बोरते हैं सदगुरु तारते हैं। बाप कहते हैं मैं तुमको इस असार संसार से पार ले जाता हूं। विषय सागर से पार ले जाना है। यह सभी बातें समझने की हैं। मांझी तो वैसे बोटचलाने वाले होते हैं। परन्तु समझाने लिए यहनाम पड़ गया है। उनको कहा जाता है प्राण बाबा। अर्थात प्राणों का दान देते हैं। अमर बनाते हैं। प्राण, आत्मा को कहा जाता है। आत्मा निकल जाती है तो कहा जाता है आत्मा निकल गई। प्राण निकल गये। फिर तो शरीर को रखने भी नहीं देते। आत्मा है तो शरीर भी तन्दुरुस्त है। आत्मा गिर तो शरीर में ही वास हो जाती है। फिर उनको रखकर क्या करेंगे। बासी चीज को थोड़ेई कोई याद करेंगे। जानवर भी ऐसे नहीं करेंगे। सिर्फ एक बन्दर है, उनका बच्चा मर जावेगा तो बास हो जावेगा तो भी दस मूर्दे को छोड़ेंगे नहीं। लटकाते जावेंगे। वह तो जानवर है। तुम तो मनुष्य हो ना। शरीर छोड़ेंगे कहेंगे जल्दी इनको निकालो। मनुष्य समझते हैं स्वर्ग पधारा। पहले जब मूर्दे को उठाते हैं तोमुंह उस तरफ टांग श्मशान तरफ करते हैं। फिर जब वहां अन्दर घूसते हैं तो/मुंह श्मशान तरफ करते हैं। पूजा आदि कर फिर समझते हैं- स्वर्ग जा रहा है तो तुम ने कृष्ण को भी स्वर्गवासी किया है। नर्क को लात मार रहा है। हाथ में स्वर्ग का गोला है। कृष्ण का शरीर तो नहीं है। उनका नामरूप देश काल बदल जाता है। कितनी बातें कितनी विशाल समझाई जाती हैं। फिर भी बाप कहते हैं मनमनाभव। यहां आकर जब बैठते हो तो अटेन्शन इसमें ही रहे। तुम्हारे लिए यह अटेन्शन सदैव के लिए है। जब तक जीते हो। मेरे को याद करते रहो। जन्म-जन्मान्तर के पाप कटने हैं। याद ही नहीं करेंगे तो पाप नहीं कटेंगे। बाप को याद करना है। आंखें कब बन्द नहीं रखनी चाहिए। सन्यासी लोग आंखें बंद कर बैठते हैं। कोई2 तो स्त्री का मुंह भी नहीं देखते हैं। पीठ देकर बैठते हैं। समझते हैं स्त्री नागिन है। अभी नाव तो पहले खुद है तब तो द्रौपदी ने पुकारा है बाबा हमको यह सर्प हमको डंसते हैं। दुशासन नंगन करते हैं। अभी कि ही बात है जब हम पुकारते हैं। तो वह भी सर्प ठहरे ना। द्रौपदी को फिर 5 पति दे दिये हैं। उनको देख यहां भी यह रस्म पड़ गई है। गन्द हो गया ना। शास्त्रों से नुकसान बहुत हो गया है। शास्त्र पढ़ते सीढ़ी नीचे ही उतरते गये हैं। फिर भी शास्त्र पढ़ेंगे। तो यहां जब बैठते हो तो रचयिता और रचना की आदि मध्य अन्तका सारा स्वदर्शन चक्र बुधि में फिरना चाहिए। लाईट हाउस हो ना। यह भी तुम जानते हो। यह है दुःखधाम। एक आंख में है शान्ति धाम दूसरे में सुखधाम। उठते-बैठते अपने को लाईट हाउस समझो। बाबा भिन्न2 नमूनेश बताते हैं। अपनी भी तुम सम्भाल करते हो। बाप को याद जरूर करना है। जड़ तो कोई चीज़ नहीं है। जब कोई रास्ते में मिले तो उनको भी बताना है। पहचान वाले भी बहुत मिलते हैं। वह तो एक दो को राम2 करते हैं। उनको भी बोलो आप को पता है यह दुःखधाम है। वह है शान्तिधाम। और सुखधाम। अभी तुम शान्तिधाम में चलने चाहते हो। किसको भी एक तीन चीज़ समझाना तो सहज है। आपको ईशारा देते हैं। लाईटहाउस भी ईशारा देते हैं ना। यह नईया है जो इस रावण के जेल में लटक पड़ी है। मनुष्य मनुष्य को सेलवेज कर न सके। वह तो सभी हैं आर्टीफिसीयल हद की बातें। यह है बेहद की बात। सोशल सोसाईटी की सेवा भी वह नहीं है। वास्तव में यह है। सभी का बेरा पार करना है। तुम्हारी बुधि में है मनुष्यों की क्या सर्विस करें। पहले2 तो कहना है शान्तिधाम को, बाप को याद करो। तुम लोग गुरु करते ही हो मुक्तिधाम जाने के लिए। बाप से मिलने के लिए। बाप से मिलने के लिए। परन्तु कोई भी मिलता नहीं। मिलने का रास्ता बाप ही आकर बतलाते हैं। वह समझते हैं यह शास्त्र आदि पढ़ने से भगवान मिलेंगे। आसरे —

पर रहने से फिर कोई न कोई रूप में मिलेगा। यह भी नहीं जानते कि कब मिलेगा। अभी बाप ने तुमको सभी कुछ समझाया है। तुमने चित्र में दिखाया है एक को याद करना है। यह भी इस समय ही तुम याद दिलाते हो। जो भी आते हैं उनको तुम समझाते हो एक को याद करो। जो भी धर्मस्थापक हैं वह भी ऐसे ईशारा देते हैं उन्होंने यहपद पाया है क्योंकि तुमने शिक्षा दी है तो वह भी ऐसे ही ईशारा देते हैं। साहब को जपो। वह बाप है सद्गुरु। बाकी तो अनेक प्रकार की शिक्षाएं देने वाले हैं। उनको कहा जाता है गुरु। गांधी टैगोर को भी कहते थे गुरु। क्या शिक्षा वह तो समझ न सके। हां अच्छे आदमी थे। बस। परन्तु यह शिक्षा तो कोई दे न सके। अशरीरी बनने की शिक्षा कोई जानते ही नहीं। तुम कहेंगे शिव बाबा को याद करो। वह लोग शिव के मंदिर में जाते हैं तो भी हमेशा शिव को बाबा कहने की आदत पड़ी हुई है। और किसको बाबा नहीं कहेंगे। बाबा एक शिव बाबा को ही कहा जाता है। आत्मा कहती है बाबा। नानक को गुरु बाबा कहते हैं। परन्तु वह निराकार तो नहीं हैं। शरीरधारी है। शिव तो है निराकार। सच्चा बाबा सभी का वह हुआ। सभी आत्माएं अशरीरी हैं। यहां भी जब बैठते हो तो इसी धून में बैठो। तुम जानते हो हम कैसे फंसे हुये थे। अभी बाप ने आकर रास्ता बताया है। बाकी सभी फंसे हुये हैं। छूटते नहीं। सजाएं खाकर फिर छूट जावें। तुम बच्चों को समझाते रहते हैं मौचरा खाकर और मानी नहीं लेनी है। मौचरा बहुत खाते हैं। तो फिर पद भी भ्रष्ट हो जाता है। मानी कम मिलती है। थोड़ा मौचरा तो मानी भी अच्छी मिलेगी। यह है कांटों का जंगल। सभी एक दो कांटे लगाते रहते हैं। स्वर्ग को कहा जाता है गार्डेन ऑफ अल्ला। क्रिश्चन लोग भी कहते हैं पैराडाईज़ था। कोई समय सा० भी कर सकते हैं। हो सकता है यहां के धर्म वाले हों। बाकी वहां जा नहीं सकते। सिर्फ देखा तो इस में क्या हुआ। देखने से कोई जा नहीं सकते। जब कि बाप को पहचाने और नालेज लेवे। सभी तो आ न सके। देवतायें तो वहां बहुत थोड़े होते हैं। अभी इतने हिन्दु हैं। असल में तो देवतायें थे ना। परन्तु वह थे पावन। यह है पतित। तो पतित को देवता कहना शोभेगा नहीं। यह एक ही धर्म है जिनको धर्म भ्रष्ट, कर्म-भ्रष्ट कहा जाता है। आदी सनातन ही हिन्दुधर्म कह देते हैं। देवता धर्म का तो कालम ही नहीं रखते। तुम बच्चों का मोस्ट बिलवेड बाप है जो तुमको क्या से क्या बना देते हैं। तुम समझा सकते हो बाप कैसे आते हैं। जब कि देवताओं की पैर भी पुरानी तमोप्रधान सृष्टि पर नहीं आती तो बाप के कैसे आवेंगे। बाप तो है निराकार। उनको अपना पांव तो नहीं हैं। इसलिए इनमें प्रवेश करते हैं।

अभी तुम बच्चे ईश्वरीय दुनिया में बैठे हो। वह सभी हैं आसुरी दुनिया में। यह बहुत ही छोटा संगम है। तुम समझते हो हम न तो दैवी संसार में हैं, न आसुरीसंसार के हैं। हम तो ईश्वरीय संसार के हैं। बाप आये हैं हमको घर ले जाने। तो बाप कहते हैं वह मेरा घर है। तुम्हारे खातिर मैं अपना घर छोड़कर आता हूं। भारत सुखधाम बन जाता है। फिर पौड़ेई में आता हूं। मैं विश्व का मालिक नहीं बनता हूं। तुम विश्व के मालिक बनते हो। हम तो ब्रह्माण्ड के मालिक हैं। ब्रह्माण्ड में तो सभी आते हैं। अभी वहां मालिक बन बैठे हैं। जिनको वापिस आना है। परन्तु वह आकर विश्व के मालिक नहीं बनते हैं। विश्व के मालिक तो वह बनते हैं जो पहले2 आते हैं। समझाते तो बहुत है। स्टुडन्ट कोई बहुत अच्छे होते हैं तो स्कालरशिप लेते हैं। अवन्डर है ना जो ईश्वर को सर्वव्यापी पत्थर मिलर में कह देते। तुम समझाते हो तो गुरु2 करते हैं। ऐसे वन्दरों के साथ हम क्यों जावें। जो गुरु2 सुननी पड़े। तुम अच्छी रीति नर्म कर ले आओ तो कुछ फायदा भी हो। उनको तो अपना अहंकार रहता है। फलाना हूं यह हूं। यह तो बच्चों का काम है हेडइडियां नर्म कर ले आवे। यहां कहते हैं हम पवित्र बनेंगे फिर यहां से जाकर पतित बन जाते हैं। ऐसे2 बच्चों को न ले आओ। ब्राह्मणी का काम है जांच कर ले आना। तुम बच्चे समझते हो हम आत्मा ही शरीर धारण कर पार्ट बजाती हैं। उनको अविनाशी पार्ट मिला हुआ है। जो बजाती रहती है। अच्छा मीठे2 सिकीलधे रूहानी बच्चों को रूहानी बाप दादा का याद प्यार गुडमार्निंग मीठे2 रूहानी बच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते।